Sushil Kumar

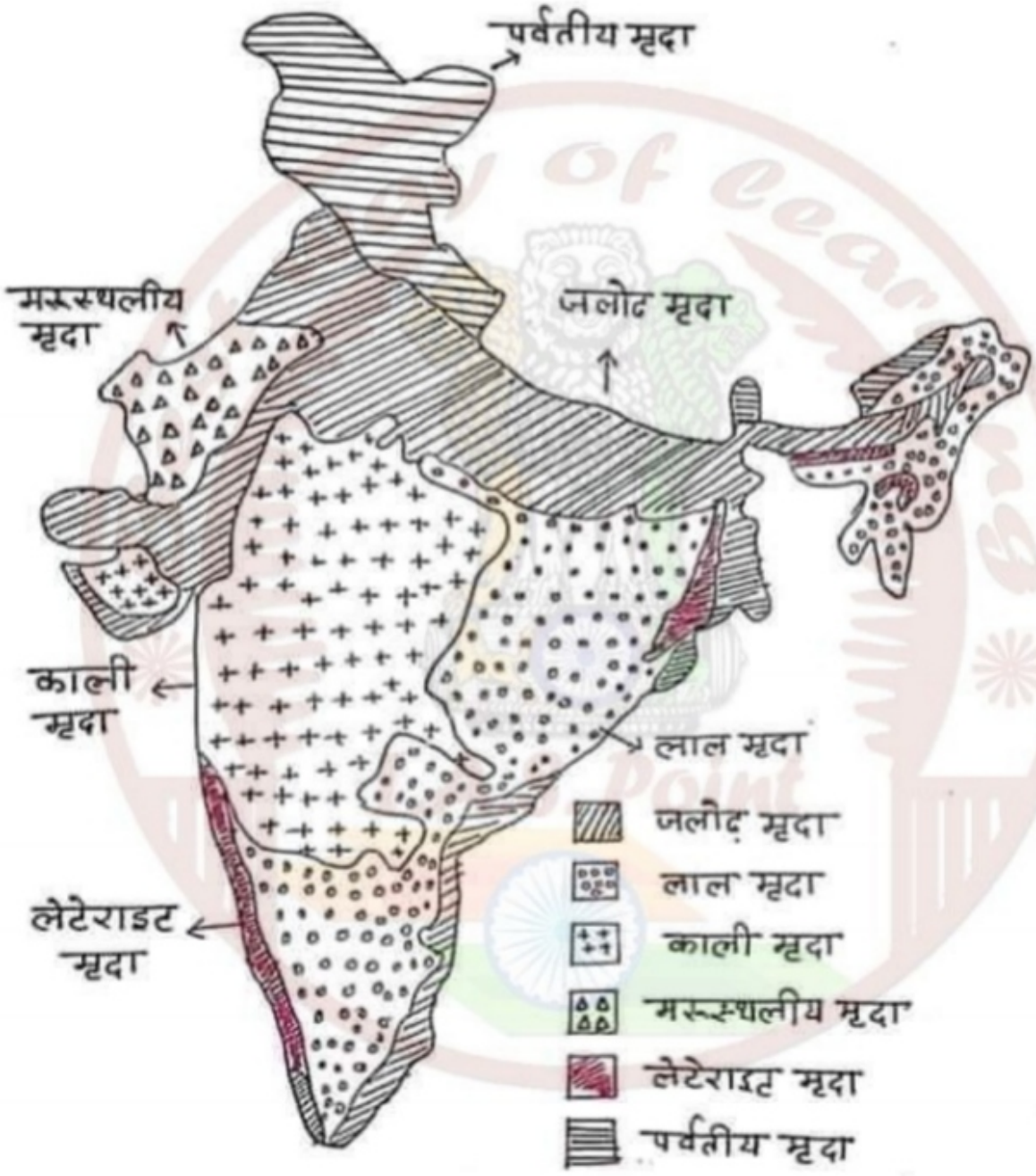
पर्वतीय मृदा
मरुस्थलीय मृदा
जलोढ मृदा
काली मृदा
लाल मृदा
लेटेराइट मृदा
जलोढ़ मृदा
लाल मृदा
काली मृदा
मरुस्थलीय मृदा
लेटेराइट मृदा
पर्वतीय मृदा

भारत में मृदा का वर्गीकरण
(Classification of Soils of India)

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) ने भारतीय मिट्टियों को 8 वर्गों में बाँटा है।

1- जलोढ़ मिट्टी (Alluvial Soils)
2- काली मिट्टी (Black Soils)
3- लाल मिट्टी (Red Soils)
4- लेटेराइट मिट्टी (Laterite Soils)
5- पर्वतीय मिट्टी (Mountain Soils)
6- मरूस्थलीय मिट्टी (Desert or Arid Soils)
7- पीट तथा दलदलीय मिट्टी (Peaty and Marshy Soils)
8- लवणीय एंव क्षारीय मिट्टी (Saline soils)

जलोढ़ मिट्टी (Alluvial Soils) →

→ इस मृदा का विस्तार देश के 43.36% भाग पर है
→ यह मृदा मुख्यत: सतलज - गंगा - ब्रहमपुत्र के मैदानो के साथ साथ पूर्वी तट की नदियो के डेल्टाओ और नदियो की घाटियों में पाई जाती है।

लाल मिट्टी (Red Soils) →

→ इसका विस्तार 18.6% भू-क्षेत्र पर है (विस्तार के दृष्टि से जलोढ़ मिट्टी के बाद दूसरी मृदा)

→ इस मृदा का विस्तार सबसे ज्यादा तमिलनाडु मे है साथ ही साथ यह कर्नाटक, दक्षिणी महाराष्ट्र, आ० प्र०, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, झारखण्ड उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड मिजोरम, मेघालय क्षेत्रो में पायी जाती है।

→ इस मिट्टी का लाल रंग लोहे के आक्साइड के मिले होने के कारण होता है

→ इसमें नाइट्रोजन, फास्फोस व ह्यूमस की कमी होती है

→ इस मिट्टी में मुख्यत मोटे अनाज दलहन तिलहन व तम्बाकू की खेती की जाती है।

काली मिट्टी (Black Soils) →

→ इसे काली कपासी मिट्टी, रेगूर तथा लावा मिट्टी के नाम से भी जाना जाता है

→ यह तीसरा सबसे बड़ा मृदा वर्ग है (15% भू भाग पर)

→ इस मृदा का निर्माण बेसाल्ट प्रधान लावा पदार्थो के विखण्डन के फलस्वरूप हुआ है।

मरूस्थलीय मिट्टी (Desert Soils) →

→ इसका विस्तार मुख्यत: राजस्थान, उत्तरी गुजरात, हरियाणा के पश्चिम, दक्षिणी पंजाब में है।

→ यह मृदाएं वास्तव मे बलुई मिट्टी हैं जिसमें लोहा व फास्फोरस पर्याप्त माला में होती हैं किन्तु इसमें पोटाश, फास्फोरस व चूने की कमी होती हैं।

→ इस मृदा में सिचाई के द्वारा मोटे अनाज जैसे - ज्वार, बाजरा, दलहन पैदा किये जाते हैं।

पर्वतीय मिट्टी (Mountain Soils) →

→ इसका विस्तार कश्मीर से अरूणाचल प्रदेश तक है यह नवीन तथा अविकसित मृदाएं हैं

→ पहाड़ी ढालो पर होने के कारण इस मिट्टी में बागानी कृषि की जाती हैं

→ यह मृदा अपरदन की समस्या से प्रभावित होती हैं।

→ इसमें जीवाश्म प्रचुर माला में पाया जाता है किन्तु पोटाश, चूना व फास्फोरस का अभाव होता हैं।

लेटेराइट मिट्टी (Laterite Soils) →

→ चौथा सबसे बड़ा मृदा वर्ग (3.7% भू क्षेत्र पर)
→ यह मिट्टियाँ सह्याद्रि राजमहल पहाड़ियो उड़ीसा तट शिलाग पठार (मेघालय) तथा मिकिर पहाड़ियो (असम) में पाई जाती हैं। (सर्वाधिक विस्तार केरल में)
→ यह मिट्टी सामान्यतः 200 सेमी से अधिक वर्षा वाले क्षेत्रो में पायी जाती है
→ अधिक वर्षा के फलस्वरूप निक्षालन क्रिया द्वारा इस मृदा में बालू व चूने के अंश रिस कर नीचे चले जाते है तथा मृदा के रूप में लोहा एवं एल्युमिनियम के यौगिक बच जाते हैं।
→ इसमें नाइट्रोजन पोटाश चूना तथा ह्यूमस की कमी होती है।
→ यह कम उर्वरता वाली मिट्टी है किन्तु उर्वरको के प्रयोग से इसमें चाय कहवा रबर सिनकोना तथा काजू आदि की खेती की जाती है।

→ इस मृदा में जल धारण करने की क्षमता सर्वाधिक होती है। यह मिट्टी गीली होने पर काफी चिपचिपी हो जाती है तथा सूख जाने पर सिकुड़ने के कारण इनमें लम्बी व गहरी दरारे पड़ जाती हैं।

→ इस मिट्टी का विस्तार महाराष्ट्र (सबसे ज्यादा), दक्षिणी पूर्वी गुजरात, पश्चिमी म०प्र०, आ० प्र०, कर्नाटक मे हैं।

→ इस मिट्टी के काला होने का मुख्य कारण इसमें लोहा एंव एल्यूमिनियम के टिटानीफेरस मैग्नेटाइट यौगिक आदि की उपस्थिति हैं

→ इसमें लोहा, एल्युमिनियम, मैग्नीशियम तथा चूने की अधिकता होती है तथा नाइट्रोजन, फास्फोरस, ह्यूमस की कमी

→ इसमे उर्वरकता अधिक होती हैं अतः जड़दार फसलें कपास, तिलहन, सोयाबीन, तूर खेती के लिए उपयुक्त होते हैं।

→ इस मृदा का निर्माण नदियों द्वारा लाये गये तलहट (Sediments) के निक्षेपण से हुआ है इस प्रकार यह अक्षेत्रीय मिट्टी है

→ इस मृदा को दो भागो में विभाजित करते हैं।

1- खादर - खादर नवीन जलोढ़ है जो वर्षाकाल में बार बार बाढ़ की चपेट में आती है जिससे इसकी उर्वरकता बनी रहती है।

2- बांगर - यह पुरानी जलोढ़ है जो 30 मीटर की ऊँचाई पर मिलती है जहाँ बाढ़ का पानी नही पहुंच पाता। बांगर भूमि में कंकड तथा अशुद्ध कैल्शियम कार्बोनेट की ग्रान्थिया पायी जाती हैं।

→ इस मृदा में पोटाश व चूना प्रचुर मात्रा में पाया जाता है किन्तु फास्फोरस, नाइट्रोजन व जीवाश्म का अभाव होता हैं। इस मिट्टी में धान, गेहूं, गन्ना, तिलहन की खेती अच्छी होती है।